ज्योतिषीय परंपरा में ज्ञान और अधिकारिता का संबंध

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

इस प्रकार ज्योतिषीय परामर्श में अधिकारिता केवल ज्ञान का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह संस्कृति, समाज, विश्वास, प्रतीक, मनोविज्ञान, संवाद, नैतिकता और आध्यात्मिकता की संयुक्त संरचना है. ज्योतिषी की वास्तविक अधिकारिता तभी सार्थक मानी जा सकती है जब वह व्यक्ति को अपने जीवन को अधिक गहराई से समझने, संकटों का अर्थ खोजने, मानसिक संतुलन प्राप्त करने और आत्मविकास की दिशा में प्रेरित करने में सहायता प्रदान करे. आधुनिक समाज में ज्योतिष की निरंतर उपस्थिति यह सिद्ध करती है कि मनुष्य केवल तर्क और विज्ञान से संतुष्ट नहीं होता, बल्कि वह अर्थ, प्रतीक, दिशा और आध्यात्मिक अनुभव की भी खोज करता है. ज्योतिषीय अधिकारिता इसी मानवीय खोज की एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और सामाजिक अभिव्यक्ति है.

मानव सभ्यता के इतिहास में ज्ञान और अधिकारिता का संबंध सदैव अत्यंत गहरा रहा है. जिस व्यक्ति या संस्था के पास समाज द्वारा मान्य विशेष ज्ञान होता है, वही समाज में प्रभाव, सम्मान और वैधता प्राप्त करता है. ज्योतिषीय परंपरा भी इसी व्यापक सामाजिक प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है. ज्योतिषीय परामर्श में 'अधिकारिता' केवल भविष्य बताने की क्षमता तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह उस सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक विश्वास-व्यवस्था का हिस्सा होती है जिसके माध्यम से ज्योतिषी को 'विशेष ज्ञान' का धारक माना जाता है. ज्योतिषीय अधिकारिता का निर्माण शास्त्रीय ज्ञान, अनुभव, प्रतीकात्मक भाषा, सांस्कृतिक परंपरा, धार्मिक विश्वास, संवाद शैली, मानसिक प्रभाव, सामाजिक प्रतिष्ठा तथा परामर्शदाता और परामर्श लेने वाले व्यक्ति के बीच विकसित होने वाले विश्वास संबंध के संयुक्त प्रभाव से होता है. इस प्रकार ज्योतिषीय परामर्श केवल तकनीकी गणना नहीं, बल्कि एक गहन सामाजिक और सांस्कृतिक संवाद की प्रक्रिया बन जाता है.

ज्योतिष का इतिहास यह दर्शाता है कि प्राचीन समाजों में ज्योतिषी केवल भविष्यवक्ता नहीं होते थे, बल्कि वे समय, प्रकृति, ऋतु, कृषि, शासन, धर्म और सामाजिक जीवन के मार्गदर्शक भी होते थे. भारत में ज्योतिष को वेदांग का स्थान प्राप्त है. 'ज्योतिषं वेदचक्षु:' की अवधारणा यह संकेत करती है कि ज्योतिष को वेदों की दृष्टि माना गया. इसका अर्थ यह था कि ज्योतिष केवल व्यक्तिगत भाग्य का अध्ययन नहीं, बल्कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था और मानव जीवन के संबंधों को समझने वाला ज्ञान है. इस कारण भारतीय समाज में ज्योतिषी को लंबे समय तक धार्मिक और सांस्कृतिक अधिकारिता प्राप्त रही. विवाह, यज्ञ, राज्याभिषेक, कृषि, यात्राएँ, धार्मिक अनुष्ठान और सामाजिक निर्णय ज्योतिषीय समय-निर्धारण के आधार पर किए जाते रहे. यही परंपरा आधुनिक समाज में भी विभिन्न रूपों में जीवित दिखाई देती है. ज्योतिषीय अधिकारिता का सबसे प्रमुख आधार शास्त्रीय ज्ञान है. भारतीय ज्योतिष की परंपरा अत्यंत समृद्ध और गहरी है. बृहत्पाराशर होरा शास्त्र, बृहतजातक, फलदीपिका, जातक पारिजात, सारावली, प्रश्न मार्ग, जैमिनी सिद्धांत, ताजिक पद्धति तथा नाड़ी ज्योतिष जैसे ग्रंथ केवल भविष्यवाणी की तकनीक नहीं बताते, बल्कि वे समय, कर्म, भाग्य, नैतिकता और जीवन-दर्शन की व्यापक व्याख्या भी प्रस्तुत करते हैं. जब कोई ज्योतिषी इन ग्रंथों के आधार पर ग्रहों, नक्षत्रों, राशियों, दशाओं, योगों और गोचर की व्याख्या करता है, तो उसकी बातों को केवल व्यक्तिगत राय नहीं माना जाता, बल्कि उन्हें एक प्राचीन और व्यवस्थित ज्ञान-परंपरा की निरंतरता के रूप में देखा जाता है. यही शास्त्रीयता ज्योतिषी की अधिकारिता को वैधता प्रदान करती है.

किन्तु केवल शास्त्रीय अध्ययन पर्याप्त नहीं माना जाता. समाज में अनेक ज्योतिषियों की प्रतिष्ठा उनके अनुभव और व्यावहारिक ज्ञान के कारण स्थापित होती है. अनुभवजन्य अधिकारिता ज्योतिषीय परामर्श का अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष है. लोग उन ज्योतिषियों पर अधिक विश्वास करते हैं जिनके बारे में यह धारणा होती है कि उनकी कही बातें सत्य सिद्ध हुई हैं या जिन्होंने अनेक लोगों के जीवन में मार्गदर्शन प्रदान किया है. यहाँ 'सत्य' का अर्थ केवल घटनाओं की शाब्दिक भविष्यवाणी नहीं होता, बल्कि व्यक्ति के जीवन की परिस्थितियों, मानसिक संघर्षों और सामाजिक वास्तविकताओं को समझने की क्षमता भी होता है. कई बार ज्योतिषी की प्रतिष्ठा उसकी संवेदनशीलता, व्यवहार और परामर्श शैली के कारण भी निर्मित होती है. यही कारण है कि समाज में कुछ ज्योतिषियों को केवल गणना करने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि जीवन-मार्गदर्शक, सलाहकार और आध्यात्मिक प्रेरक के रूप में भी देखा जाता है.

ज्योतिषीय परामर्श में प्रतीकात्मक अधिकारिता का स्वरूप अत्यंत महत्वपूर्ण है. ज्योतिष मूलत: प्रतीकों की भाषा है. ग्रह केवल भौतिक पिंड नहीं हैं, बल्कि वे मानव जीवन की विभिन्न शक्तियों और अवस्थाओं के प्रतीक हैं. सूर्य आत्मा, सत्ता और ऊर्जा का; चन्द्रमा मन और भावनाओं का; मंगल साहस और संघर्ष का; बुध बुद्धि और संवाद का; गुरु ज्ञान और धर्म का; शुक्र सौंदर्य और संबंधों का; तथा शनि कर्म, अनुशासन और संघर्ष का प्रतीक माना जाता है. राहु और केतु जीवन की जटिलताओं, भ्रम, आध्यात्मिक परिवर्तन और अदृश्य शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं. जब ज्योतिषी इन प्रतीकों के माध्यम से किसी व्यक्ति के जीवन की व्याख्या करता है, तब व्यक्ति अपने अनुभवों को एक व्यापक ब्रह्मांडीय व्यवस्था से जुड़ा हुआ महसूस करता है. यही प्रतीकात्मक संरचना ज्योतिषीय अधिकारिता को गहराई प्रदान करती है.

ज्योतिषीय अधिकारिता का मनोवैज्ञानिक पक्ष भी अत्यंत महत्वपूर्ण है. सामान्यत: व्यक्ति ज्योतिषी के पास तब जाता है जब वह जीवन के किसी संकट, अनिश्चितता, मानसिक तनाव, संबंध-विघटन, आर्थिक समस्या, स्वास्थ्य संकट या भविष्य की चिंता से गुजर रहा होता है. ऐसी स्थिति में व्यक्ति भावनात्मक रूप से संवेदनशील होता है और उसे ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता होती है जो उसके अनुभवों को अर्थ प्रदान कर सके. ज्योतिषी इस स्थिति में केवल भविष्य बताने वाला व्यक्ति नहीं रहता, बल्कि एक मनोवैज्ञानिक सहायक और भावनात्मक मार्गदर्शक बन जाता है. उसकी भाषा, सहानुभूति, धैर्य, आत्मविश्वास और संवाद शैली व्यक्ति के मन पर गहरा प्रभाव डालती है. यदि ज्योतिषी व्यक्ति की परिस्थितियों को गंभीरता से समझता है और उसे सांत्वना, आशा तथा संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करता है, तो उसकी अधिकारिता और अधिक मजबूत हो जाती है.

समकालीन समाज में ज्योतिषीय परामर्श का स्वरूप पहले की अपेक्षा अधिक संवादात्मक हो गया है. पारंपरिक समाजों में ज्योतिषी की बात को अंतिम सत्य माना जाता था. किंतु आधुनिक शिक्षा और वैज्ञानिक चेतना के प्रभाव के कारण अब व्यक्ति अधिक प्रश्न पूछता है और अपने निर्णयों में स्वतंत्रता चाहता है. इसलिए आधुनिक ज्योतिषी स्वयं को कठोर भविष्यवक्ता के रूप में प्रस्तुत करने के बजाय 'मार्गदर्शक', 'परामर्शदाता' और 'सहयोगी' के रूप में प्रस्तुत करते हैं. वे यह स्वीकार करते हैं कि ग्रह संभावनाओं और प्रवृत्तियों का संकेत देते हैं, न कि अपरिवर्तनीय भाग्य का.

16 मई को रखा जाएगा वट सावित्री व्रत

ज्येष्ठ अमावस्या पर सुहागिन महिलाएं करेंगी वट वृक्ष की पूजा

सुहागिन महिलाओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाने वाला वट सावित्री व्रत इस वर्ष 16 मई 2026, शनिवार को रखा जाएगा. ज्येष्ठ मास की अमावस्या तिथि पर मनाए जाने वाले इस व्रत को अखंड सौभाग्य, पति की लंबी आयु और सुखी वैवाहिक जीवन का प्रतीक माना जाता है. इस बार व्रत के दिन शनिश्चरी अमावस्या का विशेष संयोग भी बन रहा है, जिसे धार्मिक दृष्टि से बेहद शुभ माना जा रहा है.

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार माता सावित्री ने अपने पतिव्रत और तप के बल पर यमराज से अपने पति सत्यवान के प्राण वापस प्राप्त किए थे. तभी से वट सावित्री व्रत का विशेष महत्व माना जाता है. इस दिन महिलाएं बरगद के वृक्ष की पूजा कर पति की लंबी आयु और परिवार की सुख-समृद्धि की कामना करती हैं.

वट सावित्री व्रत ज्येष्ठ मास में दो बार मनाया जाता है. उत्तर भारत के राज्यों जैसे उत्तर प्रदेश, बिहार और दिल्ली में यह व्रत ज्येष्ठ अमावस्या को किया जाता है, जिसे वट अमावस्या भी कहा जाता है. वहीं महाराष्ट्र, गुजरात और दक्षिण भारत के कई हिस्सों में यही व्रत ज्येष्ठ पूर्णिमा को मनाया जाता है, जिसे वट पूर्णिमा कहा जाता है. इस वर्ष वट पूर्णिमा 29 जून 2026 को मनाई जाएगी.

धर्माचार्यों के अनुसार पहली बार व्रत करने वाली महिलाओं को पूजा में मायके से आई सुहाग सामग्री का उपयोग करना शुभ माना जाता है. वहीं इस दिन काले, सफेद और नीले रंग के वस्त्र पहनने से बचने की सलाह दी जाती है. मान्यता है कि विधि-विधान से किए गए इस व्रत से दांपत्य जीवन में प्रेम, स्थिरता और सुख-समृद्धि बनी रहती है.

व्रत के दिन महिलाएं सुबह स्नान कर लाल या पीले रंग के वस्त्र धारण करती हैं और सोलह श्रृंगार कर व्रत का संकल्प लेती हैं. इसके बाद बरगद के वृक्ष के नीचे सावित्री-सत्यवान और भगवान शिव की पूजा की जाती है. महिलाएं वृक्ष की सात परिक्रमा करते हुए कच्चा धागा लपेटती हैं और अखंड सौभाग्य की कामना करती हैं.

माला जाप और ध्यान : फायदेमंद अभ्यास

माला जाप का अभ्यास मानसिक शक्ति और एकाग्रता बढ़ाने के लिए अत्यंत लाभकारी माना जाता है. इसमें किसी मंत्र को माला (जैसे 108 माला की माला) की मणियों पर उच्चारण करके दोहराया जाता है. यह न केवल ध्यान की शक्ति बढ़ाता है, बल्कि मानसिक तनाव कम करने, मन को शांत करने और ऊर्जा को संतुलित करने में भी मदद करता है.

ध्यान केंद्रित होता है :- माला जाप करते समय मणियों पर ध्यान रखने से मानसिक शक्ति मजबूत होती है और विचारों का उछल-कूद कम होता है.

तनाव और चिंता कम होती है :- मंत्र का निरंतर उच्चारण और माला की गति से मन शांत होता है, जिससे चिंता और थकान कम हो जाती है.

सकारात्मक ऊर्जा मिलती है :- मंत्र उच्चारण से शरीर और मन में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बढ़ता है. स्मरण शक्ति और याददाश्त बढ़ती है: नियमित माला जाप से दिमाग की कार्यक्षमता और स्मरण शक्ति में सुधार होता है.

आध्यात्मिक विकास :- यह अभ्यास आत्म-नियंत्रण और मानसिक स्थिरता बढ़ाने में सहायक होता है.

कैसे करें माला जाप :

- शांति और साफ वातावरण में बैठें.
- किसी सरल मंत्र जैसे 'ऊं सूर्याय नम:' या कोई पसंदीदा मंत्र चुनें.
- माला की पहली मणि से शुरू करें और हर मणि पर मंत्र उच्चारित करें.
- मन को पूरी तरह मंत्र में केंद्रित रखें और सांस को नियमित करें.

अपरा एकादशी पर ये भूलें पड़ सकती हैं भारी

ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष में आने वाली अपरा एकादशी इस वर्ष 13 मई को मनाई जाएगी. हिंदू धर्म में इस एकादशी को अत्यंत पुण्यदायी और कल्याणकारी माना गया है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस दिन विधि-विधान से व्रत और पूजा करने पर भगवान विष्णु तथा माता लक्ष्मी की विशेष कृपा प्राप्त होती है, जिससे घर में सुख-समृद्धि, धन-धान्य और सकारात्मकता बनी रहती है. वहीं, कुछ ऐसी गलतियां भी बताई गई हैं, जिन्हें करने से आर्थिक तंगी और दरिद्रता आने की आशंका मानी जाती है.

पंचांग के अनुसार एकादशी तिथि 12 मई 2026 की रात 9 बजकर 56 मिनट से प्रारंभ होगी और 13 मई को दोपहर 1 बजकर 29 मिनट तक रहेगी. उदया तिथि के आधार पर व्रत 13 मई को रखा जाएगा. व्रत का पारण 14 मई की सुबह 6 बजे से 7 बजकर 41 मिनट के बीच करना शुभ माना गया है. धार्मिक ग्रंथों में अपरा एकादशी का विशेष महत्व बताया गया है. मान्यता है कि इस दिन उपवास रखने और भगवान विष्णु की आराधना करने से व्यक्ति को अनजाने में किए गए पापों से मुक्ति मिलती है और जीवन में सुख-समृद्धि का आगमन होता है. इस दिन तुलसी पूजन को भी अत्यंत फलदायी माना गया है.

धर्माचार्यों के अनुसार एकादशी के दिन तुलसी की पत्तियां तोड़ना, तुलसी के पौधे को स्पर्श करना या उसमें जल अर्पित करना वर्जित माना गया है. मान्यता है कि ऐसा करने से तुलसी माता का व्रत भंग हो जाता है और भगवान विष्णु अप्रसन्न हो सकते हैं.

पंचदेव कौन हैं और जानें उनकी पूजा का महत्व

'पंचदेव' का अर्थ है पाँच प्रमुख देवता, जिनकी पूजा एक साथ करने से जीवन में संतुलन, सकारात्मक ऊर्जा और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त होती है. धार्मिक ग्रंथों के अनुसार इन पाँच देवताओं की आराधना से सभी ग्रहों के दोष शांत होते हैं और व्यक्ति के जीवन में सुख-समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है.

हिंदू धर्म में पंचदेव पूजा को अत्यंत महत्वपूर्ण और शुभ माना गया है. 'पंचदेव' का अर्थ है पाँच प्रमुख देवता, जिनकी पूजा एक साथ करने से जीवन में संतुलन, सकारात्मक ऊर्जा और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त होती है. धार्मिक ग्रंथों के अनुसार इन पाँच देवताओं की आराधना से सभी ग्रहों के दोष शांत होते हैं और व्यक्ति के जीवन में सुख-समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है.

कौन हैं पंचदेव- पंचदेव में सामान्यत: पाँच प्रमुख देवताओं को शामिल किया जाता है—

भगवान गणेश: विघ्नहर्ता और बुद्धि के देवता, हर शुभ कार्य की शुरुआत इन्हीं से होती है

भगवान विष्णु: पालनकर्ता, जो सृष्टि के संतुलन और संरक्षण का कार्य करते हैं

भगवान शिव (महेश): संहारक और कल्याणकारी शक्ति, जो बुराई का अंत करते हैं

भगवान सूर्य: ऊर्जा, स्वास्थ्य और आत्मविश्वास के प्रतीक

देवी शक्ति (दुर्गा/लक्ष्मी/सरस्वती स्वरूप): शक्ति, धन और ज्ञान की अधिष्ठात्री

कुछ परंपराओं में ब्रह्मा को भी पंचदेव में शामिल किया जाता है,

लेकिन सामान्य पूजा पद्धति में ऊपर बताए गए पाँच देवताओं को ही प्रमुख माना जाता है.

पंचदेव पूजा का महत्व- पंचदेव पूजा केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में संतुलन बनाने का माध्यम मानी जाती है. माना जाता है कि जब व्यक्ति इन पाँच शक्तियों की एक साथ आराधना करता है तो उसके जीवन से नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है और सकारात्मकता का प्रवाह बढ़ता है.

भगवान गणेश की पूजा से कार्यों में आने वाली बाधाएँ दूर होती हैं. भगवान विष्णु की आराधना से जीवन में स्थिरता और सुरक्षा मिलती है. भगवान शिव की कृपा से मानसिक शांति और आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होती है. सूर्य देव की उपासना से स्वास्थ्य और आत्मविश्वास मजबूत होता है. वहीं देवी शक्ति की पूजा से धन, ज्ञान और साहस की प्राप्ति होती है.

धार्मिक मान्यताएं और लाभ

पंचदेव पूजा का एक बड़ा महत्व यह भी है कि इसे ग्रहों के दोष शांत करने वाला माना जाता है. ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जब व्यक्ति नियमित रूप से इन देवताओं की पूजा करता है, तो उसके जीवन में ग्रहों का प्रभाव संतुलित रहता है. इसके अलावा यह पूजा घर के वातावरण को भी सकारात्मक बनाती है. परिवार में शांति, प्रेम और एकता बनी रहती है.

ब्रह्म मुहूर्त के फायदे

ब्रह्म मुहूर्त को दिन का सबसे शांत और पवित्र समय माना जाता है. इस समय वातावरण में ऑक्सीजन की मात्रा अधिक और शुद्धता बेहतर होती है. नियमित रूप से उठने से एकाग्रता, याददाश्त और ऊर्जा में सुधार होता है. यह समय सूर्योदय से लगभग 1 घंटा 36 मिनट पहले शुरू होता है और लगभग 48 मिनट तक रहता है. धार्मिक और वैज्ञानिक दोनों दृष्टियों से इस समय को शरीर, मन और आत्मा के लिए बेहद लाभकारी माना गया है.

मानसिक शांति और एकाग्रता में वृद्धि- ब्रह्म मुहूर्त में वातावरण शांत होता है, शोर-शराबा लगभग नहीं होता. ऐसे में मन स्वाभाविक रूप से स्थिर रहता है. इस समय ध्यान, योग या पढ़ाई करने से एकाग्रता बढ़ती है और दिमाग तेज काम करता है.

स्वास्थ्य के लिए लाभकारी- इस समय हवा सबसे ज्यादा शुद्ध मानी जाती है क्योंकि प्रदूषण का स्तर कम होता है. गहरी सांस लेने और योग करने से फेफड़ों की क्षमता बढ़ती है और शरीर में ऑक्सीजन का प्रवाह बेहतर होता है.

दिनभर ऊर्जा और उत्पादकता- जो लोग नियमित रूप से ब्रह्म मुहूर्त में उठते हैं, उनका दिन अधिक व्यवस्थित और उत्पादक माना जाता है. सुबह जल्दी उठने से दिन की शुरुआत बिना भागदौड़ के होती है, जिससे मानसिक तनाव कम होता है और काम करने की क्षमता बढ़ती है.

राशिफल

दिनांक- 10 से 16 मई 2026 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित
प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार,
जबलपुर मो.नं.
098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य मेष राशि में ता. 15 को 10/4 दिन से वृषभ राशि में, मंगल मीन राशि में ता. 11 को 12/0 दिन से मेष राशि में, बुध मेष राशि में ता. 14 को 12/3 रात से वृषभ राशि में, गुरू मिथुन राशि में, शुक्र वृषभ राशि में ता. 14 को 8/35 दिन से मिथुन राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा मकर कुम्भ मीन मेष और वृषभ राशि में संचरण करेगा..

ग्रहयोगों का प्रभाव :- ता. 11 को अश्विनी मेषे भौम के प्रभाव से गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा, दालों में मंदी आएगी, सोना, चांदी, मूंगफली, अलसी, एरण्डी, सरसों मोती में तेजी आएगी, गुड, खांड, शक्कर, कपूर, घी, तेल में घटा-बढ़ी होकर मंदी होगी. ता. 15 को वृषभे रवि बाजार में तेजी का वातावरण बनाएगा, घी, रूई, सोना, चांदी, अलसी, एरण्डी, सरसों, तिल, तिलहन, तेल, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मटर, मोठ, चावल, राई में तेजी बनेगी.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

बुधवार	13 मई को	अपरा/अचला एकादशी व्रत,
गुरूवार	14 मई को	प्रदोष व्रत,
शुक्रवार	15 मई को	शिव चतुर्दशी व्रत, सूर्य वृषभ संक्रांति,
शनिवार	16 मई को	वटसावित्री अमावस्या, वट पूजन, शनि जयंती, सौर ज्येष्ठ मास प्रारम्भ,

मेष

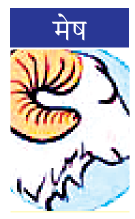

आपकी महत्वाकांक्षा चरमसीमा पर रहेगी, अनहोनी का भय रहेगा. आप भविष्य की योजना बनायेंगे. अचानक लाभ का योग है. यात्रायें आशाजनक रहेंगी, किन्तु उठाईगीरों से सावधानी रखें. रोगी के कार्यो में खर्च होगा. कानूनी मामलों में सफलता मिलेगी. पारिवारिक जीवन में वक्त देकर खुशी मिलेगी, दूसरों की सलाह पर ध्यान दें.

वृषभ

आप अत्याधिक खर्च से चिंतित रह सकते हैं, इसके बाद भी आप अपने प्रत्येक क्षेत्र में क्रियाशील बने रहेंगे. आपको अधिनस्थ की उपेक्षा का शिकार होना पड़ेगा. दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता रहेगी. नये लोगों से मेलजोल बढ़ेगा. भूमि, भवन, प्रापर्टी में खर्च होगा. नये कार्यो पर विचार होगा. इसके लिये किसी का सहयोग या बैंक से लोन लेना पड़ सकता है.

मिथुन

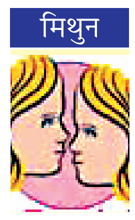

आपकी जान पहचान और परिचय का दायरा बढ़ेगा. अच्छा हो आप सामाजिक कार्यो की उपयोगिता को ध्यान में रखकर कार्य करें, पैतृक संपत्ति को बेचकर अपना हिस्सा ले सकते हैं. आप अपने निकट परिजनों के साथ दूर दराज की यात्रा का विचार करेंगे, जोखिम के कार्यो में रूचि रहेगीं आप वित्तीय मामलों में किसी का सहयोग लेंगे, जो उल्लेखनीय रहेगा.

कर्क

हंसी खुशी का वातावरण रहेगा. आपकी नौकरी की तलाश खत्म हो सकती है. पेशेवर लोगों को वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा, कारोबारी यात्राओं की अधिकता रहेगी. जल्द ही किसी बड़ी योजना को हाथ में ले सकते हैं. अपने व्यवहार और लगन का प्रयोग कर कार्यक्षेत्र में विस्तार कर सकते है. बीती बातों को याद करने से निजी संबंधों में कटुता आयेगी.

सिंह

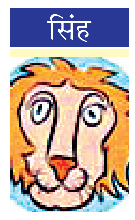

इस सप्ताह पुराना अटका धन मिलने के आसार हैं, अपने कार्यो के प्रति आप आशावादी बने रहेंगे. कई उतार चढ़ाव आयेंगे. व्यवसायिक फैसला लेने से पहले आप हर पहलू पर विचार करेंगे. घर परिवार में सुख शांति मिलेगी. पारिवारिक कार्यक्रमों में धन खर्च अधिक होगा. संबंधों के विस्तार पर ध्यान जा सकता है, और लोग प्रसन्न होकर आपसे मिलेंगे.

कन्या

आप मुश्किलों का डटकर मुकाबला करेंगे, नौकरी पेशा लोग अपने पद और आमदानी से संतुष्ट रहेंगे, यदि आप रचनात्मक क्षेत्र में हैं, तो और धन की प्राप्ति होगी. जीवनसाथी के साथ आप धार्मिक यात्रा में जा सकते है. जकर्क जायजाद से जुड़े मुकदमें में फैसला आपके पक्ष में होगा. अति आत्म विश्वास से कोई फैसला न लें, कार्यस्थल पर समस्या सुलझ सकती है.

तुला

आप जीवन के नये आयाम छुयेंगे, अपनी मेहनत और लगन के बल पर आप अपनी स्थिति में सुधार करने में सफल रहेंगे, कार्यक्षेत्र में क्रियाशील रहेंगे. खुले मन मस्तिष्क से समस्या का हल निकालेंगे. आप किसी नये अनुबंध में शामिल हो सकते हैं, जिससे मान सम्मान में प्रगति होगी, आप जिस पर अधिक भरोसा करते हैं, वही आपकी जड़ खोदने का प्रयास करेगा.

वृश्चिक

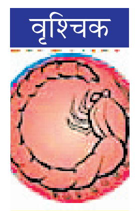

स्वास्थ्य में कुछ सुधार होने की आशा है, उधार लेनदेन से बचने का प्रयास करें, जल्दबाजी में लिये गये निर्णय बदलने पड़ सकते हैं, आयात निर्यात का प्रस्ताव मिलेगा, कामकाजी महिलाओं को परेशानी होगी, साझेदारी में संदेह आ जाने के कारण चल रहा कार्य बीच में ही छोड़ना पड़ सकता है. सावधानी बांछनीय है, बिना मांगे सलाह देना नुकसानदायक हो सकता है.

धनु

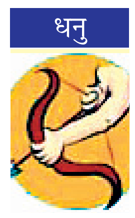

आपको नई नौकरी या नया कारोबार मिल सकता है, व्यापार के सिलसिले में यात्रा का योग बन रहा है, आपको करीबी रिश्तेदारों का सहयोग मिलेगा, बिखरे कार्य समेटने का प्रयास सफल होगा. संपत्ति के कार्यो में खर्च होगा. जानबूझकर की गई गलती की क्षमा मांगने में ही हित रहेगा. सप्ताहान्त में पारिवारिक सुखद योजना पर विचार होगा. वाहन चलाने में चोट लग सकती है.

मकर

आपको उतार चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है, कड़ी मेहनत करने पर ही सफलता मिलेगी, आप मानसिक अवसाद में रहेंगे, किसी विवाद के चलते आप के मन में नकारात्मक विचार आते रहेंगे, परिवार में अविश्वासी लोगों की सलाह से बचें, धार्मिक यात्रा की रूपरेखा बनेगी. पूज्य व्यक्ति की सलाह एवं अधिनस्थों का सहयोग आपको लाभकारी रहेगा.

कुम्भ

प्रतिस्पर्धा के दौर में किस्मत एवं मेहनत आपको भरपूर लाभ देगी, आपकी मनोकामना पूरी होगी, जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें. दाम्पत्य जीवन में तनाव की संभावना है. भाईयों के बीच जमीन जायजाद का बटवारा हो सकता है, अटके कार्य पूरे होंगे. व्यापारिक यात्रा के अच्छे परिणाम मिलेंगे. भावनात्मक संबंधों की मजबूती आपको आंतरिक खुशी देगी.

मीन

आप खुशी के समाचार सुनेंगे, परिवार की सुख सुविधाओं का ध्यान रखें, आयात निर्यात के बड़े व्यवसाय में लाभ होगा. बेरोजगारों को रोजगार मिलेंगे. प्रापर्टी संबंधी विवाद हल होगा. सप्ताह के अन्त में आपके निकटस्थ विरोधी नई मुसीबतें खड़ी कर सकते हैं, शीघ्र समाधान होगा, कामकाजी महिलाओं को परेशानी हो सकती है. कारोबारी यात्रा हो सकती है.